गुरु नानक – सबद ४४

लेखै बोलण बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १५

लेखै बोलण बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुण वेखाउ ॥
लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥
बाबा माइआ रचना धोहु ॥
अंधै नाम विसारिआ ना तिस एह न ओहु ॥१॥ रहाउ ॥
जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै काल ॥
जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिओ नाल ॥
रोवण वाले जेतड़े सभ बंनहि पंड पराल ॥२॥
सभ को आखै बहुत बहुत घट न आखै कोइ ॥
कीमत किनै न पाईआ कहण न वडा होइ ॥
साचा साहब एक तू होर जीआ केते लोअ ॥३॥
नीचा अंदर नीच जात नीची हू अत नीच ॥
नानक तिन कै संग साथ वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअन तिथै नदर तेरी बखसीस ॥४॥३॥

सार: चिंतन एक व्यक्तिगत यात्रा है जिसमें निरीक्षण, अनुभवों से सीखने और आत्म-चिंतन के माध्यम से खोज करना शामिल है। दूसरों और खुद से जुड़ने के लिए इसमें गहराई से सुनने और आंतरिक मौन की आवश्यकता होती है। दुविधाओं का सामना करने वाले व्यक्तियों के लिए चिंतन उन्हें अपनी चेतना में मौजूद रहने में मदद कर सकता है जिससे उन्हें सार्वभौमिक वास्तविकताओं और जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट करने में मदद मिलती है।

लेखै बोलण बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥
जैसा व्यक्ति अपने इरादों के अनुसार सोचता है वैसा ही वह बोलता है। जैसा व्यक्ति अपने प्रयासों के निर्धारित सोचता है वैसे ही उसकी जीविका होती है।

लेखै वाट चलाईआ लेखै सुण वेखाउ ॥
जैसा व्यक्ति अपने कार्यों के अनुसार सोचता है वैसे ही मार्ग पर वह चलता है। जैसा व्यक्ति अपने विचारों के अनुसार सोचता है वैसा ही वह सुनता और देखता है।

लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥
ब्रह्मांड के नियम के अनुसार व्यक्ति सांस लेता है। इस शाश्वत सत्य के बारे में ज्ञानी से और क्या जानने की आवश्यकता है। (१)

बाबा माइआ रचना धोहु ॥
हे ज्ञानी, सांसारिक इच्छाओं का मोह धोखा देने वाला है।

अंधै नाम विसारिआ ना तिस एह न ओहु ॥१॥ रहाउ ॥
जो अज्ञानी चिंतन का अभ्यास करना भूल गए हैं, वह भ्रम की स्थिति में रहते हैं। (१)(विराम)

जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै काल ॥
जीवन और मृत्यु एक-दूसरे से जुड़े हैं और सब पर आते हैं। समय के साथ सब नष्ट हो जाता है।

जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिओ नाल ॥
व्यक्ति केवल अपनी चेतना में अपने कर्मों का चिंतन कर सकता है। यह ऐसी जगह है जहां कोई और साथ नहीं होता।

रोवण वाले जेतड़े सभ बंनहि पंड पराल ॥२॥
मृत्यु के पश्चात, शोक करने वाले भी शरीर को जलाने के लिए लकड़ी का ढेर बांधने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। (२)

सभ को आखै बहुत बहुत घट न आखै कोइ ॥
अनंत सर्वव्यापी दिव्य ऊर्जा की महानता का जश्न मनाया जाता है और उसका सम्मान किया जाता है, कोई भी इसे छोटा नहीं कह सकता।

कीमत किनै न पाईआ कहण न वडा होइ ॥
हालाँकि कोई भी इसकी उदारता का सही अनुमान नहीं लगा सकता। शब्द इस महानता को व्यक्त नहीं कर सकते।

साचा साहब एक तू होर जीआ केते लोअ ॥३॥
वह परम सत्य और दिव्य शक्ति एक है, लेकिन उसके रूप और स्थान अनगिनत हैं। (३)

नीचा अंदर नीच जात नीची हू अत नीच ॥
भले ही कोई समाज द्वारा परिभाषित सबसे निचले तबके से संबंध रखता हो।

नानक तिन कै संग साथ वडिआ सिउ किआ रीस ॥
गुरु नानक कहते हैं, मैं उनके साथ रहना पसंद करता हूँ। समाज के उच्च वर्ग के साथ समानता की तलाश क्या करनी।

जिथै नीच समालीअन तिथै नदर तेरी बखसीस ॥४॥३॥
एक जागरूक समाज में जहां वंचितों की देखभाल की जाती है, ऐसा जागरूक निष्पक्ष समाज धन्य और दिव्य है। (४)(३)

तत्त्व: गुरु नानक इस पर प्रकाश डालते हैं कि समाज में अन्याय और असमानता जड़ जमाए भेदभावपूर्ण मानसिकता के कारण पैदा होती है। लेकिन जब लोग न्याय और समानता को प्राथमिकता देते हैं, तब वह सकारात्मक परिवर्तन के लिए मार्गदर्शक बनते हैं। इस तरह का समाज जो हर व्यक्ति को गरिमा और सम्मान के साथ देखता है तब वह एक संतुलित और दिव्य समाज बनाता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com